

03/2/25

पतावली पेरा धर । अधिवक्ता उर्ध्व मल उर्ध्व  
अनुपास्थित । अधि. विदही उध. । अधि. विदही उध  
उर्ध्वना पत्र अन्वगित धारा । 57 पा. पी. का पेरा क्रिया  
वला । शा. का. रहे । अधिवक्ता उर्ध्व मल उर्ध्व को  
रुके - रुके कर तीन - बार आलापे दिखनारि गरि ।  
सकल सोत्र 57 म ही युभा हे । अतः उर्ध्व मल अधिवक्ता  
उर्ध्व के अनुपास्थित रहने पर उर्ध्व का उर्ध्वना - पत्र  
अपन धारि / अपन पेशी से स्वारिप क्रिया पाता हे ।  
पतावली मंसल सुभाट होकर मख्बट से मल ही ।  
त्रिगुण सुभाटा वला ।

